भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् में हिन्दी सप्ताह समारोह 2011 का आयोजन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून द्वारा दिनांक 14 से 20 सितम्बर 2011 तक हिन्दी सप्ताह समारोह 2011 का आयोजन किया गया। इस समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक **14 सितम्बर 2011** को **वाद–विवाद प्रतियोगिता** आयोजित की गई जिसमें **7** प्रतिभागियों ने भाग लिया। **दिनांक 16 सितम्बर 2011** को **निबंध प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसका जिसमें **17** प्रतिभागियों ने भाग लिया। **दिनांक 19 सितम्बर 2011** को **टिप्पणी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें **12** प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा **दिनांक 20 सितम्बर 2011** को **स्वरचित काव्यपाठ** का आयोजन किया गया जिसमें **7** प्रतिभागियों ने भाग लिया। दिनांक 20 सितम्बर 2011 को ही हिन्दी सप्ताह समापन समारोह भी आयोजित किया गया। इस समारोह में डॉ. राम प्रसाद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (सेवानिवृत्त), मध्य प्रदेश का मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनय लूथरा, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कर्नाटक विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून उपस्थिति थे।

अतिथियों का पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत किया गया तथा दीपोज्वलन के उपरान्त डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक, (विस्तार) ने मंचासीन अतिथियों तथा सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान कवियों ने विभिन्न विषयों पर प्रभावशाली कवितायें पढ़ीं। डॉ. मो. युसुफ, वैज्ञानिक – एफ की कविता पर्यावरण पर पढ़ी गई कविता को सर्वाधिक सराहना मिली। काव्य पाठ के उपरान्त सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मंचासीन अतिथियों द्वारा पुरूस्कार प्रदान किया गया। पुरूस्कार वितरण के पश्चात् अपने भाषण में डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून ने कहा कि हिन्दी का निरंतर चतुर्दिक विकास हो रहा है और आने वाले वर्षों में वह और अधिक वर्चस्व प्राप्त कर लेगी। उन्होंने कहा कि हिन्दी अपने विकास के लिए सरकारी प्रयास की मोहताज नहीं है। मुख्य अतिथि डॉ. राम प्रसाद ने अपने भाषण में कहा कि वैज्ञानिक संस्थानों के कर्मियों को हिन्दी लेख प्रकाशित निकालने चाहिये तथा हिन्दी में प्रकाशन करने चाहिये क्योंकि भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् के विचार को वानिकी के क्षेत्र में अंतिम शब्द का स्थान प्राप्त है। विशिष्ट अतिथि श्री विनय लूथरा ने अपने संबोधन में कहा कि कर्नाटक में सरकारी कामकाज कन्नड़ में किया जाता है। उन्होंने बताया कि वे हिन्दी, पंजाबी, कन्नड़ व अंग्रेजी सहित 4 भाषायें जानते हैं जिस पर विदेशों के लोग बहुधा आश्चर्य करते हैं।

इस समारोह में श्री. एम.एस. गर्ब्याल, उप महानिदेशक (प्रशासन), डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा) डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा डॉ. संदीप त्रिपाठी, निदेशक, (परियोजना एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग), परिषद् मुख्यालय के समस्त अधिकारी, वैज्ञानिक एवं कर्मचारीगण तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के समस्त अधिकारी, वैज्ञानिक तथा अनुसंधान सहायक उपस्थित थे। अन्त में श्री आर. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक, मीडिया एवं प्रकाशन ने सभी का धन्यवाद देते हुए हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए समवेत प्रयास का आहवान किया जिससे भारतवर्ष के आंगन में हिन्दी की सुनहरी फसल का नवान्न उत्सव हो सके और हिन्दी व्यवहार, व्यापार, शिक्षा, शोध और विज्ञान की भाषा बन सके।